हफ़्तावार रिसाला : 387
Weekly Booklet : 387

Bukhari Shareef Ki Pahli Aur Aakhri Hadees (Hindi)

बुख़ारी शरीफ़ की पहली और आख़िरी ह़दीस

(सफ़ह़ात 24)

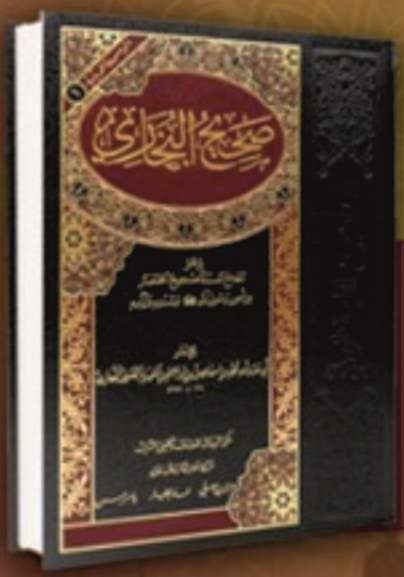

बुख़ारी शरीफ़ कैसे लिखी गई ? 03
इबादत की 2 क़िस्में 09
दीने ख़ुदा की मदद की 7 सूरतें 14
निय्यत पर अ़मल का अनोखा अन्दाज़ 19

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**बुख़ारी शरीफ़ की पहली और आख़िरी ह़दीस**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

बुख़ारी शरीफ़ की पहली और आख़िरी ह़दीस[1]

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 23 सफ़ह़ात का रिसाला : **''बुख़ारी शरीफ़ की पहली और आख़िरी ह़दीस''** पढ़ या सुन ले उसे अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से नवाज़ कर जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला अ़त़ा फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते ह़फ़्स बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते अबू ज़ुरआ़ राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देखा कि वोह पहले आस्मान पर फ़रिश्तों को नमाज़ पढ़ा रहे हैं, मैं ने पूछा : ऐ अबू ज़ुरआ़ ! आप को येह इन्आ़म किस इ़बादत के बदले में मिला ? इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने अपने हाथ से दस लाख ह़दीसें लिखी हैं और हर ह़दीस में ''عَنِ النَّبِيِّ''

1... 10 शव्वाल शरीफ़ को आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का ''यौमे विलादत'' है। इस मौक़अ़ पर दा'वते इस्लामी के जामिअ़ातुल मदीना में ''दौरतुल ह़दीस शरीफ़'' के त़लबा के दरमियान इफ़्ति़ताहे़ बुख़ारी का सिल्सिला होता है, 10 शव्वाल 1442 और 1443 हिजरी मुत़ाबिक़ 22 मई 2021 और 11 मई 2022 के इफ़्ति़ताहे़ बुख़ारी के मौक़अ़ पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बुख़ारी शरीफ़ की पहली ह़दीसे पाक पढ़ा कर उस के तह़्त कुछ मदनी फूल बयान फ़रमाए, जो ज़रूरतन तरमीम व इज़ाफ़े के साथ अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे ''हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़'' की त़रफ़ से रिसाले की सूरत में पेश किये जा रहे हैं।

के बा'द "صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ" कहा है और बेशक **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुसल्मान मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक भेजता है तो **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मा'लूम हुवा येह सब दुरूदो सलाम की बरकत है ।" (تاریخ بغداد، 10/334 ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इस वाक़िए़ में जिस बुज़ुर्ग को ख़्वाब में देखा गया या'नी इमामुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते अबू ज़ुरआ़ उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल करीम राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 264 हि.) येह सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ की अह़ादीस के रावियों में से हैं। नीज़ बुख़ारी शरीफ़ की आख़िरी ह़दीस के रावियों में भी इन का नाम जगमगा रहा है।

इमाम बुख़ारी और बुख़ारी शरीफ़

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! "बुख़ारी शरीफ़" अह़ादीसे मुबारका की बड़ी बा बरकत और अ़ज़ीम किताब है, इस किताब का पूरा नाम जो इमामुल मुह़द्दिसीन अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने रखा वोह येह है : اَلْجَامِعُ الْمُسْنَدُ الصَّحِيْحُ الْمُخْتَصَرُ مِنْ اُمُوْرِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ وَسُنَنِهٖ وَاَيَّامِهٖ । (تہذیب الاسماء واللغات، 1/91)

बुख़ारी शरीफ़ के बारे में कहा जाता है : اَصَحُّ الْكُتُبِ بَعْدَ كِتَابِ اللّٰهِ اَلصَّحِيْحُ الْبُخَارِيُّ या'नी क़ुरआने करीम के बा'द सब से दुरुस्त तरीन किताब सह़ीह़ बुख़ारी है। (لمعات التنقیح، 1/123) इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का एक अहम लक़ब "अमीरुल मुअमिनीन फ़िल ह़दीस" है।

बुख़ारी शरीफ़ कैसे लिखी गई ?

ह़ज़रते इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बड़े आ़शिक़े रसूल और नेक परहेज़ गार बुज़ुर्ग, ज़बर दस्त आ़लिमे दीन और मुह़द्दिस थे, अदब का आ़लम येह था कि हर ह़दीस को लिखने और किताब में शामिल करने से पहले ग़ुस्ल फ़रमाते, फिर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर ह़दीसे पाक की सिह़ह़त (या'नी चन्द मख़्सूस शराइत़ के सबब सह़ीह़ होने) के बारे में इस्तिख़ारा फ़रमाते और फिर उसे किताब में शामिल करते। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बुख़ारी शरीफ़ 16 साल में लिखी। (فتح الباری، 1/461 ملتقطاً)

बुख़ारी शरीफ़ में कितनी अह़ादीस हैं ?

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी इस किताब के लिये छे लाख ह़दीसों में से सवा सात हज़ार से ज़ाइद ह़दीसों का इन्तिख़ाब फ़रमाया। (تاریخ بغداد، 2/14) शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि शैख़ुल इस्लाम, इमामुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ "सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" में अह़ादीसे मुबारका की कुल ता'दाद सात हज़ार तीन सो सत्तानवे (7397) है। (नुज़्हतुल क़ारी, 1/136)

बुख़ारी शरीफ़ लिखने का सबब

"सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" लिखने का सबब इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के उस्तादे मोह़तरम की तरग़ीब है, जैसा कि इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के उस्तादे मोह़तरम ह़ज़रते इमाम इस्ह़ाक़ बिन राह्वैह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक दिन अपने शागिर्दों से फ़रमाया : अगर तुम लोगों से हो सके तो कोई ऐसी मुख़्तसर किताब लिख दो जिस में सह़ीह़ अह़ादीस ही हों, उस वक़्त इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

भी वहां ह़ाज़िर थे, इन के दिल में येह बात बैठ गई, उसी वक़्त इन्हों ने दिल ही दिल में त़ै कर लिया कि मैं ऐसी किताब लिखूंगा। (تاریخ ابن عساکر، 52/72)

सह़ीह़ ह़दीस का मत़लब

अ़वाम के लिये एक अहम बात येह है कि अह़ादीस की कई अक़्साम हैं और "सह़ीह़" ह़दीसे पाक की आ'ला क़िस्म है कि सनद व मत्न की सिह़्ह़त के ए'तिबार से इस की ख़ूब छानबीन हुई है, इस का हरगिज़ येह मत़लब नहीं है कि सह़ीह़ ह़दीस के मुक़ाबले में जो दीगर अह़ादीस हैं वोह सब ग़लत़ हैं बल्कि उन अह़ादीस की अपनी अपनी ता'रीफ़ात हैं, अलबत्ता बुख़ारी शरीफ़ में सह़ीह़ दरजे की अह़ादीस जम्अ़ की गई हैं।

बुख़ारी शरीफ़ की बरकतें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मुश्किलें ह़ल होने के लिये "बुख़ारी शरीफ़" के ख़त्म को बुज़ुर्गों ने मुजर्रब (आज़माया हुवा) लिखा है। ह़ज़रते इमाम असीलुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी और दूसरों की मुश्किलात व परेशानियों के लिये "सह़ीह़ बुख़ारी" का 120 बार ख़त्म किया पस सारी मुरादें और ज़रूरिय्यात पूरी हुईं, येह सारी बरकतें सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हैं। क़ह़त़ साली (या'नी बारिशें न हो रही हों और अनाज की तंगी हो गई हो, उन दिनों) में अगर येह किताब पढ़ी जाए तो बारिश हो जाती है और जिस कश्ती में येह किताब हो वोह कश्ती डूबती नहीं है। (مرقاۃ، 1/54) बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने ख़त्मे बुख़ारी के मौक़अ़ पर सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार भी किया है। (الفوائد الدراری، 1/157) **अल्लाह** पाक ने बुख़ारी शरीफ़ को बड़ी मक़्बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाई है।

सदियां (या'नी सेंकड़ों बरस) गुज़र जाने के बा वुजूद अब तक येह मुबारक किताब इस्लामी मदारिस में पढ़ाई जाती है। **अल्लाह** पाक हमें इस मुबारक किताब की बरकतें नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मेरी किताब का दर्स क्यूं नहीं देते ?

ह़ज़रते इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने यूं तो कई किताबें लिखीं लेकिन जो मक़्बूलिय्यत और शोहरत "सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" को मिली वोह किसी और किताब को ह़ासिल न हो सकी। ह़ज़रते इमाम अबू ज़ैद मुह़म्मद बिन अह़मद मर्वज़ी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ एक मरतबा मक्कए पाक में मक़ामे इब्राहीम और ह़जरे अस्वद के दरमियान सोए हुए थे कि ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़ैद ! हमारी किताब का दर्स क्यूं नहीं देते ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी जान आप पर क़ुरबान ! आप की किताब कौन सी है ? तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जामेए मुह़म्मद बिन इस्माईल" या'नी इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की किताब "सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़।"

(التدوین فی اخبار قزوین، 2/46)

बुख़ारी शरीफ़ की पहली ह़दीसे पाक

عَلْقَمَةُ بْنُ وَقَّاصٍ اللَّيْثِيُّ، يَقُولُ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَلَى المِنْبَرِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا، أَوْ إِلَى امْرَأَةٍ يَنْكِحُهَا، فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ

तरजमा : ह़ज़रते अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास लैसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ عَنْه को मिम्बर शरीफ़ पर येह कहते हुए सुना कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना है : बेशक आ'माल का दारो मदार निय्यत ही पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जो उस ने निय्यत की तो जिस की हिजरत दुन्या की त़रफ़ हो जिसे वोह ह़ासिल करे या किसी औ़रत की त़रफ़ हो जिस से वोह निकाह़ करे तो उस की हिजरत उसी की त़रफ़ है जिस की त़रफ़ उस ने हिजरत की। (بخاری، 1/5، حدیث:1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

शर्ह़े ह़दीस और रावी का मुख़्तसर तआ़रुफ़

इस मुबारक ह़दीस के रावी मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू ह़फ़्स उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ عَنْه हैं। **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ से आप ईमान लाए, आप इस्लाम लाने वाले चालीसवें मुसल्मान हैं, इस वज्ह से आप को "मुतम्मिमुल अर्बईन" (या'नी चालीस के अ़दद को पूरा करने वाले) भी कहते हैं। (ابن ماجہ، 1/77، حدیث:105۔ معجم کبیر، 12/47، حدیث:12470) आप رَضِیَ اللهُ عَنْه अ़शरए मुबश्शरा में से हैं (या'नी उन दस ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम में से हैं जिन्हें रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुसूसिय्यत के साथ जन्नत की ख़ुश ख़बरी इनायत फ़रमाई)। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه से 539 अह़ादीसे मुबारका रिवायत की गई हैं जिन में से तक़रीबन 81 रिवायात बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में हैं। (تہذیب الاسماء واللغات، 2/325) आप رَضِیَ اللهُ عَنْه के ह़ालाते मुबारका की मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की दो जिल्दों पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने

फ़ारूक़े आ'ज़म'' और रिसाला ''करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म'' को पढ़ना बहुत मुफ़ीद है।

सह़ाबा और अहले बैत की दिल में मह़ब्बत है

ब फ़ैज़ाने रज़ा मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ह़दीसे पाक के लफ़्ज़ ''اَلْاَعْمَال'' से मुराद

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह (या'नी बुख़ारी शरीफ़ की पहली ह़दीसे पाक में आया हुवा लफ़्ज़ ''आ'माल'') इ़बादात, मुह़र्रमात, मक्रूहात, मुबाह़ात सब को शामिल है मगर यहां मुराद सिर्फ़ आ'माले सालिह़ा हैं और गहरी नज़र से देखा जाए तो मुबाह़ात भी। (नुज़्हतुल क़ारी, 1/224, तह़तल ह़दीस : 1) या'नी अगर कोई मुबाह़ काम भी अच्छी निय्यत के साथ किया जाए तो वोह इ़बादत बन जाता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

निय्यत किसे कहते हैं ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ''निय्यात'' निय्यत की जम्अ़ है, निय्यत दिल के पक्के इरादे को कहते हैं ख़्वाह वोह किसी चीज़ का हो और शरीअ़त में इ़बादत के इरादे को निय्यत कहते हैं। किसी भी अ़मले ख़ैर पर सवाब निय्यत ही से मिलेगा, बिग़ैर निय्यत कोई सवाब नहीं मिलेगा। (नुज़्हतुल क़ारी, 1/224, 227, तह़तल ह़दीस : 1)

निय्यत के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، 6/185، حدیث:5942)

﴾2﴿ अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल करेगी।

(مسند الفردوس، 4/305، حدیث:6895)

﴾3﴿ जिस ने नेकी का इरादा किया फिर उसे न किया तो उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी। (مسلم، ص74، حدیث:337)

पक्के इरादे का मत़लब येह है कि मैं ने येह काम करना ही है, अगर कश्मकश हो या'नी येह होगा तो करूंगा, वोह होगा तो करूंगा, कोशिश करूंगा वग़ैरा तो फिर येह वोह निय्यत नहीं है जिस पर सवाब की ख़ुश ख़बरी बयान की जा रही है।

बुज़ुर्गाने दीन और इल्मे निय्यत

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم अ़मल से पहले निय्यत सीखा करते थे। ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : पहले के लोग अ़मल के लिये इस त़रह़ निय्यत सीखते थे जिस त़रह़ अ़मल सीखते थे। (قوت القلوب، 2/268)

बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने फ़रमाया : अ़मल से पहले उस की निय्यत सीखो ! और जब तक तुम नेकी की निय्यत पर रहोगे भलाई पर रहोगे। (قوت القلوب، 2/268)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पहले बा क़ाइ़दा "निय्यत" सिखाई जाती थी, येह एक बहुत बड़ा मौज़ूअ़ होता था। उ़लमाए निय्यत भी होते थे, अब तो ख़ुदा ही बेहतर जाने। आ़म त़ौर पर अब मदारिसे दीनिय्या में निय्यत का बाब तफ़्सीली त़ौर पर नहीं पढ़ाया जाता, पहले के मुक़ाबले में अब दर्से निज़ामी की मुद्दत भी कम हो गई है, ख़ुदा जाने आगे चल के क्या होगा ? हो सकता है कि फिर सिर्फ़ मौज़ूअ़ ही रह जाए। इस की वज्ह येह है कि हमारा इल्मे दीन ह़ासिल करने की त़रफ़ रुज्ह़ान बहुत कम हो गया

है । **अल्लाह** पाक दा'वते इस्लामी को सलामत रखे । اَلْحَمْدُلِلّٰه ! (बॉयज़ एन्ड गर्ल्ज़) की एक ता'दाद है जो जामिआ़तुल मदीना में इ़ल्मे दीन सीखने आ रही है वरना ह़ालात बड़े नाज़ुक हो रहे हैं ।

इ़बादत की 2 क़िस्में

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इ़बादत व निय्यत का गहरा तअ़ल्लुक़ है जैसा कि इ़बादत की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿ इ़बादते मक़्सूदा : जैसे नमाज़ रोज़ा कि इन से मक़्सूद सवाब ह़ासिल करना है, इन्हें अगर बिग़ैर निय्यत अदा किया जाए तो येह सह़ीह़ न होंगे, इस लिये कि इन के करने का मक़्सद ही सवाब ह़ासिल करना था और जब सवाब ख़त्म हो गया तो इस की वज्ह से अस्ल शै ही अदा न होगी (या'नी बिग़ैर निय्यत के नमाज़ होगी न ही रोज़ा होगा) इसी त़रह़ जो भी इ़बादाते मक़्सूदा हैं वोह बिग़ैर निय्यत के सह़ीह़ नहीं होंगी । ﴾2﴿ और दूसरी क़िस्म है : इ़बादते ग़ैर मक़्सूदा : जो दूसरी इ़बादतों के लिये ज़रीआ़ हो जैसे नमाज़ के लिये चलना, वुज़ू, ग़ुस्ल वग़ैरा । इन इ़बादाते ग़ैर मक़्सूदा को अगर कोई निय्यते इ़बादत के साथ करेगा तो उसे सवाब मिलेगा और अगर बिला निय्यत करेगा तो सवाब नहीं मिलेगा मगर इन का ज़रीआ़ या वसीला बनना अब भी दुरुस्त होगा और बिग़ैर निय्यत वाले वुज़ू और ग़ुस्ल से नमाज़ सह़ीह़ हो जाएगी । (नुज़्हतुल क़ारी, 1/226) फ़र्ज़ कीजिये कि ज़ैद बे वुज़ू था, अचानक बारिश शुरूअ़ हो गई और उस के तमाम आ'ज़ाए वुज़ू बारिश के पानी से धुल गए तो ऐसी सूरत में ज़ैद की निय्यत वुज़ू की नहीं थी लेकिन चूंकि आ'ज़ाए वुज़ू उस के धुल चुके या'नी सारे आ'ज़ाए वुज़ू पर कम अज़ कम दो दो क़त़रे पानी के बह गए और सर पर

भी कम अज़ कम पानी की तरी आ गई तो उस का वुज़ू हो गया मगर वुज़ू का सवाब नहीं मिलेगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

निय्यत के बदलने से हुक्म बदल जाता है

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से किसी ने पूछा कि एक साह़िब ने चन्दा (दे कर) मस्जिद बनवाने की कोशिश की, इसी वज्ह से अपना नाम भी पथ्थर में लिखवाना चाहते हैं। आया नाम लिखवाना शर्अ़न दुरुस्त है या नहीं ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाया : नाम लिखवाने का हुक्म निय्यत के बदलने से मुख़्तलिफ़ होता है अगर निय्यत रिया व नमूद है (या'नी दिखावे के लिये है तो) ह़राम व मरदूद है और अगर निय्यत येह है कि जब तक नाम लिखा रहे मुसल्मान दुआ़ से याद करें तो ह़रज नहीं और ह़त्तल इम्कान मुसल्मान का काम नेक निय्यती ही पर मह़मूल किया जाएगा।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/389 तस्हीलन)

किसी को रियाकार न कहें, न समझें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हम मुसल्मान के साथ हुस्ने ज़न रखेंगे कि उस ने किसी मस्जिद या किताब या किसी भी इ़बादत की चीज़ पर नाम लिखवाया, हम एक दम से उस को रियाकार न कहें। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बद गुमानी ग़ीबत से कम गुनाह नहीं है। बिलफ़र्ज़ ! वोह रियाकार है भी तो रिया का तअ़ल्लुक़ दिल से है और येह दिल की बीमारियों में से है, हमारे पास कौन सा आला है जिस से हमें पता चल गया कि उस ने नाम रिया के लिये लिखवाया है अगर्चे वोह रियाकार हो वोह

इन्दल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक के हां) रियाकार है। हम ने अगर उस के बारे में ऐसा सोचा तो उस से बद गुमानी कर के हम गुनाहगार हो चुके और कह भी दिया कि येह रिया कर रहा है फिर तो येह तोहमत हो गई जो बद गुमानी से भी ज़ियादा ख़त़रनाक हो सकती है। येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, लोग बात बात पर कह देते हैं कि "येह झूट बोलता है, दिखावा करता है, येह इस लिये करता है, उस लिये करता है", बा'ज़ सूरतों में बिला वज्ह हम ऐसी बातें कर जाते हैं जो तोहमत में आती हैं, तोहमत की बुराई में एक ह़दीसे पाक बड़ी डराने वाली है कि "तोहमत लगाने वाले को रद्ग़तुल ख़बाल में रखा जाएगा, यहां तक कि वोह अपनी उस तोहमत से निकल जाए।" (ابوداؤد، 3/427، حدیث:3597) रद्ग़तुल ख़बाल ऐसी जगह है जहां जहन्नमियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होता है। (معالم السنن، 3/175) वाक़ेई तोहमत बहुत ख़त़रनाक है। हमारे रोज़मर्रा के मा'मूलात में से तोहमत की चन्द मिसालें येह हैं : किसी के बारे में बोलेंगे : येह मत़लबी है, मफ़ाद परस्त है, मफ़ाद होता है तो येह काम करता है वरना नहीं करता, इन में बा'ज़ सूरतों में हमारी गुफ़्तगू सो फ़ीसद तोहमत ही होती है।

ख़ूब सूरत बात

यूं तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर बात मुझे (या'नी इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को) पसन्द है अलबत्ता गुफ़्तगू के बारे में सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से एक बात मुझे बड़ी पसन्द आई वोह येह कि "सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी किसी से वोह बात करते ही नहीं थे जो उसे ना पसन्द हो।" (شمائل محمدیہ، ص197، حدیث:329)

ख़ुदा की क़सम ! येह इतना प्यारा मदनी फूल है कि अगर येह सुन्नते करीमा हमारी आ़दत में शामिल हो जाए तो सारे फ़साद ख़त्म हो जाएं। **अल्लाह** करे कि गुफ़्तगू से पहले हमारी येह सोचने की आ़दत बन जाए कि मैं जो बात करने लगा हूं क्या प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह बात करते ? मैं जो बात करने लगा हूं क्या वोह बात सामने वाले को सुन कर पसन्द आएगी ? जब कि शर्अ़न वोह बात कहने की ज़रूरत भी न हो। इस त़रह़ सोचने से मेरा ख़याल है कि हम बहुत सारी ख़राबियों से बच जाएंगे, हमारा माह़ोल मदीना मदीना हो जाएगा, **अल्लाह** करे ! मुझे भी इस पर अ़मल की सआ़दत मिल जाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दीन का तिहाई ह़िस्सा

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई और दूसरे अइम्मए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم इस ह़दीसे पाक "اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ" के बारे में फ़रमाते हैं : येह ह़दीस "सुलुसे इस्लाम" या'नी दीन का तिहाई ह़िस्सा है। (شرح مسلم للنووی، 13/53)

इमामुल फ़ुक़हा वल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद बिन अह़मद ऐनी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : इस ह़दीसे पाक में निय्यत का बयान है और इस्लाम के अह़काम पर अ़मल तीन त़रह़ से होता है : ﴾1﴿ क़ौल से ﴾2﴿ फ़े'ल से और ﴾3﴿ निय्यत से, लिहाज़ा "निय्यत एक तिहाई इस्लाम" है। (عمدۃ القاری، 1/49، تحت الحدیث:1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इबादत के 2 जुज़

इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इबादत के दो ह़िस्से हैं : ﴾1﴿ निय्यत और ﴾2﴿ अ़मल।

लेकिन निय्यत की अहम्मिय्यत ज़ियादा है क्यूं कि आ'ज़ा (Parts of Body) से अ़मल करने का मक़्सद येह है कि उस अ़मल का असर दिल पर पड़े और दिल भलाई की त़रफ़ माइल हो कर बुराई से दूर हो जैसा कि सज्दा करने का मक़्सद सिर्फ़ पेशानी का ज़मीन पर रखना नहीं बल्कि दिल में ख़ुज़ूअ़ (या'नी आ़जिज़ी) पैदा करना है, यूंही ज़कात की अदाएगी का मक़्सद सिर्फ़ येह नहीं कि माल अपनी मिल्किय्यत से निकल जाए बल्कि दिल से बुख़्ल की गन्दगी को दूर करना मक़्सूद है और येह मक़्सद माल का दिल से तअ़ल्लुक़ तोड़ने से ह़ासिल होगा, इस लिये आप भी कोशिश कीजिये कि अपने तमाम आ'माल में अच्छी निय्यतों की कसरत करें, ह़त्ता कि एक अ़मल के लिये कई कई निय्यतें करें, अगर आप का जज़्बा सच्चा हुवा तो आप अच्छी अच्छी निय्यतें करने का त़रीक़ा सीखने में काम्याब हो जाएंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم (المدخل، 1/7 ملخصًا)

अच्छी निय्यत का फ़ाएदा और बुरी निय्यत का नुक़्सान

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हर काम पर सवाब चूंकि अच्छी निय्यत ही की वज्ह से मिलता है और बुरी निय्यत से अच्छे से अच्छा काम बेकार हो जाता है, इस लिये इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इस ह़दीसे पाक से किताब का आग़ाज़ किया की क़ारी और मुक़्री (या'नी पढ़ने और पढ़ाने वाला) शैख़ व तल्मीज़ (या'नी उस्ताद और शागिर्द) पढ़ना पढ़ाना अच्छी निय्यत के साथ करें, किसी बुरी निय्यत से न करें वरना सब मेह़नत बेकार है।

(नुज़्हतुल क़ारी, 1/230 तस्हीलन)

इमाम शम्सुद्दीन बिरमावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इसी लिये जब इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने अपनी निय्यत को ख़ालिस और मक़्सद को

सुथरा किया तो **अल्लाह** करीम ने इन की किताब को मख़्लूक़ के लिये फ़ाएदा देने वाली बना दिया। (اللامع الصبیح بشرح الجامع الصحیح، 1/17، تحت الحدیث:1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

किताब लिखने की निय्यत

ह़ज़रते इमाम अबू दावूद त़यालिसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाया करते थे कि आ़लिम को लाज़िम है कि जब कोई किताब लिखे तो उस की निय्यत में दीन की मदद का इरादा हो, येह इरादा न हो कि उ़म्दा तालीफ़ (या'नी अच्छी किताब) के सबब लोग मुझे अच्छा समझें, अगर येह इरादा करेगा तो इख़्लास जाता रहेगा। (تنبیہ المغترین، ص26)

क़ुरआने करीम के पारह 26, **सूरए मुह़म्मद** की आयत नम्बर 7 में इर्शाद होता है : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ یَنْصُرْكُمْ وَ یُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝﴾ **आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान :** ऐ ईमान वालो ! अगर तुम **अल्लाह** के दीन की मदद करोगे तो **अल्लाह** तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमाएगा।

दीने ख़ुदा की मदद की 7 सूरतें

"तफ़्सीरे सिरातुल जिनान" में है : **अल्लाह** पाक के दीन की मदद की बहुत सूरतें हैं, उन में से 7 सूरतें दर्जे ज़ैल हैं :

﴾1﴿ **अल्लाह** पाक के दीन को ग़ालिब करने के लिये दीन के दुश्मनों के साथ ज़बान, क़लम से जिहाद करना। ﴾2﴿ दीन के दलाइल को वाज़ेह़ करना, उन पर होने वाले शुबुहात को दूर करना, दीन के अह़काम, फ़राइज़, सुनन, ह़लाल व ह़राम की शर्ह़ बयान करना। ﴾3﴿ नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना। ﴾4﴿ दीने इस्लाम की तब्लीग़ो इशाअ़त में

कोशिश करना। ﴾5﴿ वोह क़ाबिल व मुस्तनद उ़लमा जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगियां दीन की तरवीजो इशाअ़त के लिये वक़्फ़ की हुई हैं उन के नेक मक़ासिद में उन का साथ देना। ﴾6﴿ नेक और जाइज़ कामों में अपना माल ख़र्च करना। ﴾7﴿ उ़लमा और मुबल्लिग़ीन की माली ख़ैर ख़्वाही कर के उन्हें दीन की ख़िदमत के लिये फ़ारिग़ुल बाल करना। इन सात सूरतों के इलावा और भी बहुत सी सूरतें हैं जो **अल्लाह** पाक के दीन की मदद करने में दाख़िल हैं। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, 9/298 मुलख़्ख़सन)

मुसल्मान अच्छी निय्यत के सबब हमेशा जन्नत में रहेगा

"मिरक़ातुल मफ़ातीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़" में है : मुसल्मान अपने अ़मल की वज्ह से नहीं बल्कि अच्छी निय्यत के सबब हमेशा जन्नत में रहेगा क्यूं कि अगर अ़मल की वज्ह से जन्नत में रहता तो जितना अ़मल किया उतना या उस से चन्द गुना ज़ियादा ठहरता लेकिन चूंकि मुसल्मान की येह निय्यत होती है कि अगर वोह हमेशा ज़िन्दा रहा तो हमेशा ही इस्लाम पर क़ाइम रहेगा लिहाज़ा इस अच्छी निय्यत के सबब **अल्लाह** पाक उसे हमेशा के लिये जन्नत अ़ता फ़रमाएगा। इसी त़रह़ काफ़िर अपनी बुरी निय्यत की वज्ह से हमेशा जहन्नम में रहेगा क्यूं कि उस की येही निय्यत होती है कि अगर वोह हमेशा ज़िन्दा रहा तो हमेशा काफ़िर रहेगा लिहाज़ा इस निय्यत की वज्ह से **अल्लाह** पाक उसे हमेशा हमेशा जहन्नम में रखेगा।

(مرقاۃ المفاتیح، 1/98 ملخصاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक का हम जितना एह़सान मानें और शुक्र अदा करें वोह कम है कि उस ने हम को अपने प्यारे

प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में मुसल्मान पैदा किया।

"नेक निय्यत" के 6 हुरूफ़ की निस्बत से निय्यत के बारे में 6 वाक़िआ़त

﴾1﴿ चलने की कोई निय्यत समझ नहीं आ रही

ह़ज़रते यह़या बिन यह़या नैशापूरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने दवा पी तो आप की ज़ौजए मोह़तरमा ने अ़र्ज़ की : अगर आप घर में थोड़ी चेहल क़दमी कर लें ताकि दवा का असर अच्छी त़रह़ हो तो बेहतर होगा, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझे इस चलने की कोई निय्यत समझ नहीं आ रही और मैं तो तीस साल से अपना मुह़ासबा कर रहा हूं कि कौन सा अ़मल किस काम के लिये किया। अब इस का मेरे पास कोई जवाब ही नहीं है कि मैं ने चेहल क़दमी क्यूं की। (منہاج القاصدین، ص112)

﴾2﴿ कंघी करने की निय्यत थी आईना देखने की नहीं थी

एक बुज़ुर्ग बालों में कंघी करना चाहते थे, उन्हों ने अपनी ज़ौजए मोह़तरमा से कंघी लाने का इर्शाद फ़रमाया, तो ज़ौजए मोह़तरमा ने अ़र्ज़ की : आईना भी ले आऊं ? थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बा'द फ़रमाया : हां ! (वोह भी ले आओ)। ख़ामोश रहने की वज्ह पूछी गई तो फ़रमाया : कंघी की तो मेरी निय्यत थी लेकिन आईना देखने की निय्यत नहीं थी इस लिये मैं ने तवक़्क़ुफ़ किया (या'नी रुक गया) यहां तक कि इस की निय्यत भी **अल्लाह** पाक ने दिल में पैदा फ़रमा दी। (احیاء العلوم، 5/101)

﴾3﴿ खाना और न खाना दोनों नमाज़ के लिये

ह़ज़रते इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन

अस्वद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه निय्यत के बिग़ैर रोटी नहीं खाया करते थे, किसी ने पूछा रोटी खाने में उन की क्या निय्यत होती थी ? फ़रमाया : वोह उस वक़्त खाना खाते जब उन पर नमाज़ पढ़ना दुश्वार हो जाता और त़ाक़त नहीं रहती थी और खाने में कमी कर देते थे ताकि नमाज़ के लिये नशात़ ह़ासिल हो सके, फिर जब खाने में कमी करने की वज्ह से कमज़ोर पड़ जाते तो त़ाक़त ह़ासिल करने के लिये दोबारा खाना शुरूअ़ कर देते, उन का खाना और न खाना दोनों नमाज़ के लिये होते थे। (بستان العارفین للنووی، ص74)

अल्लाह वालों की भी क्या बात है ! एक हम हैं कि लज़्ज़त के लिये खाते पीते हैं, ''बहारे शरीअ़त'' में लिखा है कि ''तलज़्ज़ुज़ व तनअ़्ज़ुम या'नी लज़्ज़त ह़ासिल करने और मज़े लेने के लिये खाना बुरी सिफ़त है।''

(बहारे शरीअ़त, 3/375, ह़िस्सा : 16)

आह ! हमारा क्या बनेगा ? येह ह़लाल व ह़राम की बात नहीं तक़्वे की बातें हैं, अगर किसी ने लज़्ज़त के लिये ग़िज़ा खाई तो उस को गुनाहगार नहीं कहेंगे लेकिन अगर कोई अच्छी निय्यत नहीं है तो क़ियामत के दिन उस खाने का ह़िसाब देना पड़ेगा।

﴾4﴿ दर्स के लिये जाने से पहले निय्यतें करते

ह़ज़रते अ़ल्लामा शरीफ़ समहूदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे शैख़, फ़क़ीहुल अ़स्र शरफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब दर्स के लिये तशरीफ़ ले जाने लगते तो पहले अपने घर के सह़न में खड़े हो कर रियाकारी से बचने और इख़्लास के ह़ुसूल के लिये निय्यत को ज़ेह़न में दोहराते।

(فیض القدیر، 2/286، تحت الحدیث:1725)

या'नी पहले ठहर कर येह ज़ेह्न बनाते कि मैं जो करने जा रहा हूं येह सिर्फ़ **अल्लाह** पाक को राज़ी करने के लिये करूंगा, दिखावा और रियाकारी करने के लिये नहीं करूंगा।

रियाकारी की ता'रीफ़

"रिया" के लुग़वी मा'ना "दिखावे" के हैं। "**अल्लाह** पाक की रिज़ा के इ़लावा किसी और इरादे से इ़बादत करना रियाकारी कहलाता है।" गोया इ़बादत से येह ग़रज़ हो कि लोग उस की इ़बादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की ता'रीफ़ करें या उसे नेक आदमी समझें या उसे इ़ज़्ज़त वग़ैरा दें। (नेकी की दा'वत, स. 66)

﴾5﴿ जैसी निय्यत वैसा फल

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अच्छी निय्यत अच्छा और बुरी निय्यत बुरा फल लाती है बल्कि बसा अवक़ात बुरी निय्यत का बुरा फल हाथों हाथ ज़ाहिर भी हो जाता है, जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : एक बादशाह एक बार अपनी सल्त़नत के दौरे पर निकला, इस दौरान एक शख़्स के पास उस का क़ियाम हुवा, (मेज़बान बादशाह को जानता नहीं था) मेज़बान ने शाम को अपनी गाय को दोहा तो बादशाह येह देख कर ह़ैरान रह गया कि उस से 30 गायों के बराबर दूध निकल पड़ा ! बादशाह ने दिल ही दिल में वोह अनोखी गाय छीन लेने की बुरी निय्यत कर ली। दूसरे रोज़ शाम को उस गाय से आधा दूध निकला, बादशाह ने जब तअ़ज्जुब का इ़ज़्हार किया तो मेज़बान साह़िब कहने लगे : "बादशाह ने अपनी रिआ़या के साथ ज़ुल्म की निय्यत की है जिस की नुहूसत से आज

दूध आधा हो गया है, (ह़ालां कि उस को पता नहीं था कि येह बादशाह है), जब बादशाह ज़ालिम हो तो बरकत ख़त्म हो जाती है।" मेज़बान से जब येह हैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ बादशाह ने सुना तो उस ने अनोखी गाय ज़ुल्मन छीन लेने की निय्यत ख़त्म कर दी। चुनान्चे दूसरे दिन गाय ने फिर उतना ही दूध दिया जितना पहले दिया था। इस वाक़िए़ से बादशाह को बड़ी इ़ब्रत ह़ासिल हुई और उस ने अपनी रिआ़या पर ज़ुल्म करना बन्द कर दिया। (شعب الایمان، 6/53، حدیث:7475)

﴾6﴿ निय्यत पर अ़मल का अनोखा अन्दाज़

ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (जो कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के ग़ुलाम थे) फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا रोज़ा रखा करते और ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या बिन्ते उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا उन की इफ़्त़ारी के लिये कोई चीज़ बना दिया करती थीं, एक दिन उन के पास उ़म्दा क़िस्म का अनार लाया गया तो दरवाज़े पर एक साइल ने सुवाल किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "येह उसे दे दो।" लेकिन ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "उस के लिये इस से बेहतर है।" फिर ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने मुझ (या'नी ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) से फ़रमाया : उसे फ़ुलां चीज़ दे दो। फिर जब वोह अनार ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के सामने पेश किया गया तो उन्हों ने फ़रमाया : "इसे उठाओ और किसी दूसरे साइल को दे दो कि मैं इसे सदक़ा करने की निय्यत कर चुका हूं।" (हुस्ने अख़्लाक़, स. 80)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! राहे ख़ुदा में देने की निय्यत भी वापस नहीं ली, ह़ालां कि (सिर्फ़ निय्यत से) उन की मिल्क में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा था, फिर भी

निय्यत की तो अब उस को पूरा करने का ज़ेह्न है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जितनी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब ज़ियादा

"सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" की पहली ह़दीसे पाक में येह भी है : "اِنَّمَا لِكُلِّ امْرِىءٍ مَّانَوٰى" या'नी हर शख़्स के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की। उ़लमाए किराम के एक गुरौह का येह फ़रमाना है कि इस जुम्ले से मक़्सद येह है कि बन्दा नेक अ़मल में जिस त़रह़ की और जितनी निय्यतें करेगा उसे वैसे ही बदला मिलेगा, या'नी पहले जुम्ले में इस बात का बयान था कि हर जाइज़ अ़मल के इ़बादत बनने के लिये निय्यत शर्त़ है और इस जुम्ले में इस बात का बयान है कि मोमिन शख़्स नेक अ़मल में जिस त़रह़ की और जिस क़दर निय्यत करेगा उसे वैसा और उतना ही सवाब मिलेगा।

(ارشاد الساری، 1/93)

आ़लिमे निय्यत आ'ला ह़ज़रत का इर्शादे बा बरकत

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब काम कुछ बढ़ता नहीं, सिर्फ़ निय्यत कर लेने में एक नेक काम के दस हो जाते हैं तो एक ही निय्यत करना कैसी ह़माक़त और बिला वज्ह अपना नुक़्सान है।" (फ़तावा रज़विय्या, 23/157)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! निय्यत के मौज़ूअ़ पर मक्तबतुल मदीना की दो किताबें : ﴾1﴿ "सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े" और ﴾2﴿ "बहारे निय्यत" हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाइये, येह कुतुब दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड भी की जा सकती हैं। अब "ख़त्मे बुख़ारी

शरीफ़" की तक़रीब में बयान की जाने वाली बुख़ारी शरीफ़ की आख़िरी ह़दीसे पाक पढ़िये :

बुख़ारी शरीफ़ की आख़िरी ह़दीसे पाक

عَنْ اَبِیْ زُرْعَةَ، عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ "كَلِمَتَانِ حَبِیْبَتَانِ اِلَی الرَّحْمٰنِ، خَفِیْفَتَانِ عَلَی اللِّسَانِ، ثَقِیْلَتَانِ فِی الْمِیْزَانِ: سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ

तरजमा : ह़ज़रते अबू ज़ुरआ रَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْه ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : रह़मान عَزَّوَجَلَّ को दो कलिमे बहुत पसन्द हैं, वोह दोनों कलिमे ज़बान पर हलके हैं और मीज़ाने अ़मल में भारी हैं (और वोह दो कलिमे येह हैं :) سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ ।

(بخاری، 4/600، حدیث: 7563)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : रब तआ़ला को येह कलिमात बड़े प्यारे हैं तो जो इन का विर्द करेगा वोह भी प्यारा होगा, उस की ज़बान प्यारी होगी ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3/338)

अच्छे अख़्लाक़ ह़ासिल होने का ज़रीआ़

ह़ज़रत इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْه इर्शाद फ़रमाते हैं : इन कलिमात "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ" के ज़बान पर हलके होने की वज्ह येह है कि इन के ह़ुरूफ़ कम हैं और इन कलिमात के मीज़ान पर वज़्नदार होने और **अल्लाह** पाक के प्यारे होने की वज्ह येह है कि पहले कलिमे का पहला ह़िस्सा "سُبْحَانَ اللّٰه" इस बात को ज़ाहिर करता है कि **अल्लाह** पाक उन तमाम बातों से बरी है जो उस की पाक बारगाह के लाइक़ नहीं । तस्बीह़ या'नी سُبْحَانَ اللّٰه पढ़ना गुनाहों के मिटाने और बुराइयों के

मुआ़फ़ होने का वसीला है, उम्मीद है कि **अल्लाह** पाक "سُبْحَانَ اللّٰه" कहने वाले या वोह विर्द जिस में **अल्लाह** की पाकी बयान की गई हो उस के पढ़ने वाले को उन तमाम बातों से पाक करेगा जो उस पढ़ने वाले के लाइक़ नहीं और **अल्लाह** पाक अपनी ता'रीफ़ करने वाले के अन्दर सिफ़ाते कमाल ज़ाहिर करेगा, इन कलिमात को बार बार पढ़ने के सबब गुनाह दूर होते और इन के ज़रीए अच्छे अख़्लाक़ ह़ासिल होते हैं। (मक्तूबाते इमामे रब्बानी (उर्दू), 1/754 मुलख़्ख़सन) ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की पाकी बयान करते रहने से वबाओं से ह़िफ़ाज़त होती है।

अच्छी निय्यत का फ़ाएदा

ह़ज़रते इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने "सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़" को "اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है" वाली ह़दीसे पाक से शुरूअ़ फ़रमाया और इस ह़दीस (या'नी बुख़ारी शरीफ़ की आख़िरी ह़दीस) पर अपनी किताब को ख़त्म फ़रमाया, इस की वज्ह येह है कि ह़दीसे निय्यत का तअ़ल्लुक़ दुन्या से है चूंकि दुन्या आ'माल का घर है और आ'माल का सवाब निय्यत पर मौक़ूफ़ है और बुख़ारी शरीफ़ की इस आख़िरी ह़दीस का तअ़ल्लुक़ आख़िरत से है क्यूं कि हमारे आ'माल का आख़िरत में वज़्न किया जाएगा, इस में एक उ़म्दा इशारा है कि मीज़ाने अ़मल में उसी के आ'माल का वज़्न भारी होगा जिस की निय्यत अच्छी होगी। **अल्लाह** करे हमारे अन्दर अच्छी अच्छी निय्यतों का जज़्बा पैदा हो और हम इ़ल्मे निय्यत ह़ासिल करने वाले बनें, **अल्लाह** करीम तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	किताब लिखने की निय्यत	14
इमाम बुख़ारी और बुख़ारी शरीफ़	2	दीने ख़ुदा की मदद की 7 सूरतें	14
बुख़ारी शरीफ़ कैसे लिखी गई ?	3	मुसल्मान अच्छी निय्यत के सबब	
बुख़ारी शरीफ़ में कितनी अह़ादीस हैं ?	3	हमेशा जन्नत में	15
बुख़ारी शरीफ़ लिखने का सबब	3	निय्यत के बारे में 6 वाक़िआ़त	16
सह़ीह़ ह़दीस का मत़लब	4	चलने की कोई निय्यत	
बुख़ारी शरीफ़ की बरकतें	4	समझ नहीं आ रही	16
मेरी किताब का दर्स क्यूं नहीं देते ?	5	कंघी करने की निय्यत थी	
बुख़ारी शरीफ़ की पहली ह़दीसे पाक	5	आईना देखने की नहीं	16
शर्ह़े ह़दीस और रावी का मुख़्तसर तआ़रुफ़	6	खाना और न खाना दोनों नमाज़ के लिये	16
ह़दीसे पाक के लफ़्ज़ "اَلْاَعْمَال" से मुराद	7	दर्स के लिये जाने से पहले निय्यतें करते	17
निय्यत किसे कहते हैं ?	7	रियाकारी की ता'रीफ़	18
निय्यत के मुतअ़ल्लिक़		जैसी निय्यत वैसा फल	18
3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	7	निय्यत पर अ़मल का अनोखा अन्दाज़	19
बुज़ुर्गाने दीन और इ़ल्मे निय्यत	8	जितनी निय्यतें ज़ियादा	
इ़बादत की 2 क़िस्में	9	उतना सवाब ज़ियादा	20
निय्यत के बदलने से ह़ुक्म बदल जाता है	10	आ़लिमे निय्यत आ' ला ह़ज़रत का	
किसी को रियाकार न कहें, न समझें	10	इर्शादे बा बरकत	20
ख़ूब सूरत बात	11	बुख़ारी शरीफ़ की	
दीन का तिहाई ह़िस्सा	12	आख़िरी ह़दीसे पाक	21
इ़बादत के 2 जुज़	12	अच्छे अख़्लाक़	
अच्छी निय्यत का फ़ाएदा और		ह़ासिल होने का ज़रीआ़	21
बुरी निय्यत का नुक़्सान	13	अच्छी निय्यत का फ़ाएदा	22

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025